डॉ० ओम प्रकाश आ...
महाराजा कॉलेज
आरा

बी॰ ए॰ स्नातक सेमेस्टर – III
विषय – संस्कृत, MJC – III

उपनिषद् ग्रन्थ

'उप' तथा 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'सद्' धातु से 'क्विप्' प्रत्यय करने पर 'उपनिषद्' शब्द की सिद्धि होती है। 'उप' का अर्थ है – समीप, 'नि' का अर्थ है – निष्ठापूर्वक तथा 'सद्' का अर्थ है – बैठना। इस प्रकार 'उपनिषद्' का अर्थ होता है – तत्वज्ञान के लिए गुरु के पास निष्ठापूर्वक बैठना। उपनिषद् का अर्थ ब्रह्मविद्या भी माना जाता है। शंकराचार्य ने अविद्या-नाश, दुःखनिरोध तथा ब्रह्मप्राप्ति – इन तीनों को ब्रह्मविद्या का द्योतक माना है। प्राचीन काल में हमारे ऋषियों ने जो बीज आरण्यकों में बोया था वही बीज उपनिषदों में पुष्पित व पल्लवित हुआ दिखाई पड़ता है। यदि उपनिषदों की संख्या पर विचार किया जाए तो उपनिषदों की संख्या 200 तक मानी जाती है। इनमें से दस की ही प्रधानता है। इन उपनिषदों पर शंकराचार्य ने अपना भाष्य लिखा है। दस उपनिषदों के नाम इस प्रकार हैं –

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक्य-तित्तिरिः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा॥

उपनिषदों में प्रमुख रूप से ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन किया गया है। अतः ब्रह्म, आत्मा, माया, जगत, पुनर्जन्म आदि इन्हीं उपनिषदों के ही विषय हैं। उपनिषदों का मानना है कि यह सम्पूर्ण जगत ब्रह्ममय है इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है - "ईशा वास्यमिदं सर्वम्"। ब्रह्म के विषय में 'बृहदारण्यकोपनिषद्' में कहा गया है कि वह न स्थूल है, न सूक्ष्म है, न लघु है न गुरु है वह रसहीन तथा गन्धहीन है, वह नित्य है तथा नाक-कान आदि से भी रहित है। वह ब्रह्म चक्षु-वाणी-मन आदि की गति से रहित है। उसकी इच्छा से ही मन-वाणी-चक्षु आदि अपना-अपना कार्य करते हैं -

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते॥
(केनोपनिषद् 1.5.)

उपनिषदों में एक ओर ज्ञानमार्ग की विवेचना है तो दूसरी ओर कर्म एवं भक्ति मार्ग की। एक ओर प्रवृत्ति मार्ग की प्रधानता है तो दूसरी ओर निवृत्ति मार्ग की प्रधानता है। यदि एक ओर 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' का वर्णन किया गया है तो दूसरी ओर द्वैत सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। उपनिषदों में ब्रह्म तथा आत्मा का प्रयोग उनके एकीभाव के रूप में हुआ है। इनमें आत्मा को ही ब्रह्म तथा ब्रह्म को ही आत्मा माना गया है - 'अयमात्मा ब्रह्म'।

ऋग्वेदीय उपनिषद् ग्रन्थ

(क) ऐतरेय उपनिषद् - इसमें विश्व की उत्पत्ति

के विषय में बताया गया है।
(ख) कौषीतकि उपनिषद् - इसमें चार अध्याय हैं तथा इसे 'ब्राह्मणोपनिषद्' के नाम से भी जाना जाता है।
(ग) वाष्कलोपनिषद - यह उपनिषद् ऋग्वेद की वाष्कल शाखा के अन्तर्गत आती है, परन्तु आज यह उपलब्ध नहीं है। 25 मन्त्रात्मक इस उपनिषद् में आत्मतत्व की विवेचना की गई है।

यजुर्वेदीय उपनिषद् ग्रन्थ

(क) ईशावास्योपनिषद - यजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय ही ईशावास्योपनिषद् के नाम से जाना जाता है। यह सभी उपनिषदों में सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीवित रहने की कामना की गई है।
(ख) बृहदारण्यकोपनिषद् - शुक्ल यजुर्वेद पर प्राप्त यह उपनिषद् सबसे बड़ा माना जाता है। इसमें कुल छः अध्याय हैं।
(ग) कठोपनिषद् - कृष्ण यजुर्वेद की शाखा पर उपलब्ध यह उपनिषद् अपने अद्वैत तत्व के प्रतिपादन हेतु प्रसिद्ध है। यम और नचिकेता की कथा के माध्यम से इसमें आत्मा एवं ब्रह्म पर प्रकाश डाला गया है।
(घ) मैत्रायणी उपनिषद् - यह कृष्ण यजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा से सम्बन्ध रखता है। यह गद्य-पद्य रूप में है।

(ङ) तैत्तिरीयोपनिषद् - इसमें तीन वल्लियाँ हैं - शिक्षावल्ली, भृगुवल्ली तथा ब्रह्मानन्दवल्ली। 'मातृदेवो भव' इसी उपनिषद् का कथन है। इसमें शिक्षा के अंगों का विशेष वर्णन किया गया है।

(च) श्वेताश्वतर-उपनिषद् - इसमें ब्रह्म तथा आत्मा के रहस्य का स्पष्ट विवेचन किया गया है। इसमें सांख्य तथा वेदान्त दर्शन के सिद्धान्तों की विवेचना भी की गई है।

सामवेदीय उपनिषद् ग्रन्थ

(क) छान्दोग्य उपनिषद् - इसके प्रथम तथा द्वितीय अध्याय में साम तथा सामगान के रहस्यों का वर्णन किया गया है। इसके साथ-साथ 'ओउम' शब्द की उत्पत्ति के विषय में बताया गया है।

(ख) केनोपनिषद् - इसको तवलकारोपनिषद् के नाम से भी जाना जाता है। यह उपनिषद् चार खण्डों में विभक्त है। इसके प्रथम खण्ड में उपास्य ब्रह्म तथा निर्गुण ब्रह्म में अन्तर बताया गया है। द्वितीय खण्ड में ब्रह्म के रहस्यमय रूप का वर्णन है। तृतीय खण्ड तथा चतुर्थ खण्ड में उमा-हेमवती के आख्यानों द्वारा ब्रह्म की सत्ता का वर्णन किया गया है।

अथर्ववेदीय उपनिषद् ग्रन्थ

(क) प्रश्नोपनिषद् - यह छः खण्डों में विभक्त है। इसका प्रत्येक खण्ड एक प्रश्न के नाम से जाना जाता है। इसमें सुकेशा-शैव्य, सौर्यायणी-गार्ग्य, पिप्लाद-भार्गव, वैदर्भी-कबन्धी, कात्यायन आदि के प्रश्न और उत्तर हैं। प्राचीनकाल में छः शिक्षार्थी अपने हाथों में

समिधा लिए हुए महर्षि पिप्लाद के आश्रम पर जाते हैं। महर्षि उन सभी को एक वर्ष तक तप करने का आदेश देते हैं। तत्पश्चात उनके प्रश्नों का उत्तर देते हैं। छः शिष्यों के प्रश्नों का उत्तर ही इसका प्रमुख विषय है।

(ख) मुण्डकोपनिषद् - यह उपनिषद तीन मुण्डकों तथा प्रत्येक मुण्डक दो-दो खण्डों में विभक्त है। इस प्रकार इसके तीन मुण्डकों (अध्यायों) में छः खण्ड हैं। इसके प्रथम भाग में ब्रह्म तथा वेदों की व्याख्या, द्वितीय भाग में ब्रह्म के स्वरूप तथा विश्व से उसका सम्बन्ध एवं तृतीय भाग में ब्रह्म प्राप्ति के साधन बताए गये हैं।

भिद्यते हृदयग्रन्थि छिद्यन्ते सर्व संशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥

'वेदान्त' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इसी में हुआ है।

(ग) माण्डूक्योपनिषद - यह बारह खण्डों में विभक्त है जिनमें ब्रह्म और आत्मा की विवेचना की गई है। चतुष्पादात्मा का वर्णन भी इसी में किया गया है।

॥ इति ॥